नवीन आरम्भ २०१६
सिद्धयोग ध्यान शिक्षक द्वारा एक पत्र

०६ जनवरी, २०१६

प्रियजनों,

नमस्ते!

नूतन वर्षाभिनन्दन २०१६!

नूतन वर्षाभिनन्दन! बौन आने! फ़ैलीज़ एन्यो नुएवो! अकेमाश्ते औमेदेतो गोज़ाईमास!

वर्ष २०१६ के आरम्भ में, १ जनवरी को विश्वभर के सिद्धयोगियों तथा नए जिज्ञासुओं ने *एक मधुर सरप्राइज़* सत्संग में भाग लेकर नववर्ष का स्वागत किया, जिसमें गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने वर्ष २०१६ के लिए अपना सन्देश प्रदान किया।

जिस प्रकार वर्ष के पहले दिन उदित होता हुआ सूर्य एक नए आरम्भ की घोषणा करता है, उसी प्रकार, जब हम श्री गुरुमाई का सन्देश प्राप्त करते हैं, तो हम उनसे दिशा-निर्देश भी प्राप्त करते हैं, जो आगे उस वर्ष के लिए हमारे अध्ययन और अभ्यास को नवजीवन से भर देते हैं। हमारी सिद्धयोग साधना के लिए कैसा सुन्दर प्रोत्साहन है! मेरे लिए, दृढ़ रहने के लिए यह एक प्रेरणा है, चाहे मेरी मन की स्थिति या प्राथमिकताएँ कैसी भी हों।

नए आरम्भ....क्या वर्ष २०१६ की जगमगाती आशाओं को देख आप खुशी से उछल नहीं रहे हैं? क्या आप आने वाली अनेक सम्भावनाओं की प्रत्याशा से भर गए हैं? आपके लिए "नया" शब्द किस बात का प्रतीक है? मेरे लिए "नया" शब्द उल्लसित होकर गूँजता है; यह स्वच्छ है; इसकी सुगन्ध निर्मल है; इसका स्वाद जादूभरा है; इसका एहसास स्फूर्तिदायक है। यह मुझे सचेत और फुर्तीला बना देता है; यह विस्मय से भरा है; यह जीवन्त है। नए उद्देश्य। नई प्रेरणाएँ। नए दृष्टिकोण। नए संकल्प। नई प्रतिज्ञाएँ। सब कुछ नया! केवल "नया" शब्द लिखने मात्र से मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि मैं एक नया व्यक्ति बन रहा हूँ। यह कितना अद्‌भुत है? मेरा अहोभाग्य!
गुरुमाई जी बताती हैं कि किस प्रकार जिज्ञासुओं को अपना मनोभाव हमेशा एक **नए** जिज्ञासु, नई शुरुआत करने वाले व्यक्ति जैसा रखना चाहिए, जैसे कि उनके लिए सिखावनियाँ एकदम नई हों, वे इस पथ पर नए हों, साधना के लिए नए हों। इस प्रकार, वे एक उत्साहपूर्ण दृष्टिकोण तथा सीखते रहने की ललक दोनों ही बनाए रख पाते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, नए आरम्भों को स्वर्णिम अवसरों के रूप में मनाया जाता है और इनका सम्मान किया जाता है। जिससे हम अपने आध्यात्मिक अभ्यासों के प्रति अपनी वचनबद्धता को नवीन कर सकें और अपने प्रयत्नों पर पुनः केन्द्रित हो सकें। मैंने पाया है कि वर्ष के आरम्भ में हम जो संकल्प लेते हैं, उन संकल्पों में हमें उस ओर ले जाने की बहुत शक्ति होती है जिसे हमारा हृदय चाहता है और जो हमारे लिए अत्यधिक हितकारी है। यह, नए आरम्भों के समय एक स्पष्ट उद्देश्य को निर्धारित करने की शक्ति है।

वर्ष २०१६ के लिए संकल्प लेने का यही समय है। मैं आपको पूरे वर्ष गुरुमाई जी के सन्देश का गहराई से अध्ययन और अभ्यास करने हेतु समय देने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। ऐसा करने के लिए आपके पास कई अवसर होंगे, जैसे कि :

- सीधे ऑडिओ प्रसारण द्वारा मासिक ध्यान सत्र
- साधना रिट्रीट
- गुरुदेव सिद्धपीठ में 'हृदय की तीर्थ-यात्रा' रिट्रीट
- पारिवारिक रिट्रीट
- किशोर-युवा रिट्रीट

आप सिद्धयोग महोत्सवों में भाग लेने के बारे में योजना बना सकते हैं, जैसे कि :

- २१ मई, २०१६ को गुरुमाई जी के परम प्रिय गुरु, बाबा मुक्तानन्द का १०८ वाँ चन्द्रतिथि के अनुसार जन्मदिवस महोत्सव
- पूरा जून माह- जन्मदिवस आनन्दोत्सव
- गुरुमाई जी का जन्मदिवस, २४ जून को
- गुरुपूर्णिमा, १९ जुलाई को
- अक्टूबर माह में बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान शिविर

सिद्धयोग पथ वेबसाइट देखते रहें। यह सिद्धयोग गुरुओं की सिखावनियों से परिपूर्ण है, जो इस प्रकार व्यक्त की गई हैं कि वे पाँचों इन्द्रियों के नैसर्गिक, विशुद्ध स्वभाव को आकर्षित करती हैं।

सिद्धयोग पथ वेबसाइट वास्तव में अप्रतिम है। अपनी साधना को विकसित करने के लिए यह एक निरन्तर मिलने वाली प्रेरणा है और मार्गदर्शन का एक झरना है। यहाँ हरेक के लिए कुछ न कुछ है। बाबा मुक्तानन्द ने सिखाया है कि सिद्धयोग पथ हर एक के लिए है, फिर वे चाहे किसी भी उम्र, वर्ग, राष्ट्रीयता, धर्म, क्षेत्र, जाति एवं सम्प्रदाय के क्यों न हों। यह सत्य सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर भी लागू होता है। आधुनिक तकनीक के उपयोग द्वारा अपनी सिखावनियाँ सबको प्रदान करने तथा पहुँचाने के लिए मैं गुरुमाई जी को जितना धन्यवाद दूँ वह कम है। यदि मुझे संसार, मन की बेचैनी, और किसी आध्यात्मिक विकार का उपचार बताना हो तो, यह होगा हर एक दिन सिद्धयोग पथ वेबसाइट को देखना और उससे जुड़े रहना।

सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर जनवरी माह के कार्यक्रमों की सूची, गुरुमाई जी के सन्देश का गहनता तथा अर्थपूर्ण तरीके से अध्ययन और अभ्यास करने के हमारे वर्ष का आरम्भ करेगी। मैं इनमें से कुछ कार्यक्रमों और अध्ययन के साधनों को बताना चाहूँगा।

- अब आप सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर गुरुमाई जी के सन्देश की कलाकृति का *दर्शन* कर सकते हैं।
- ७ जनवरी को वर्ष २०१६ के लिए गुरुमाई जी के सन्देश के शब्द प्रकाशित होंगे।
- ७ जनवरी को उस दिन की ४४वीं वर्षगाँठ भी है जिस दिन बाबा मुक्तानन्द ने श्रीगुरुगीता को आश्रम दैनिक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में स्थापित किया था।
- १४ जनवरी नव आरम्भ के महोत्सव को अंकित करता है, जिसे भारत की आध्यात्मिक परम्परा मकर संक्रान्ति कहते हैं। इस दिन लोग सूर्य देवता की पूजा करते हैं, जो पृथ्वी पर प्रकाश और जीवन लाते हैं। भारतीय दर्शन शास्त्रों में सूर्य का परमात्मा के प्रतीक के रूप में सम्मान और चिन्तन किया जाता है।

आपको यह बताते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि मकर संक्रान्ति के सम्मान में, १४ जनवरी को एक सीधा आडिओ **सत्संग** होगा, जिसका प्रसारण श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर से होगा, और इसका शीर्षक है- *दो देदीप्यमान सूर्यों की आराधना !* इस सत्संग के दौरान, विश्वभर के सिद्धयोगी और नए जिज्ञासु, पवित्र स्वाध्याय ***श्रीगुरुगीता*** का पाठ करेंगे। इस कार्यक्रम का और अधिक विवरण शीघ्र ही सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर उपलब्ध होगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखते रहें।

दिन-प्रतिदिन होने वाले सत्संगों के लिए, सिद्धयोग पथ वेबसाइट एक **वैश्विक हॉल** ही है। यह ***शक्ति***, प्रज्ञान और आशीर्वादों से जीवन्त है। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप प्रतिदिन वेबसाइट देखें और आप जो प्राप्त करने व सीखने की ललक रखते हैं, निश्चित रूप से वही प्राप्त करें। जैसा कि बाबा मुक्तानन्द कहते हैं, "अपने चश्में का नम्बर बदलो!" जैसा कि गुरुमाई चिद्विलासानन्द कहती हैं, "बस ऐसा करो! अब आपका समय है!" नया आरम्भ महान सौभाग्य का सूचक है। वर्ष २०१६ के इस नए आरम्भ का पूर्ण लाभ उठाएँ!

नवीन शुभकामनाओं सहित ☺,

स्वामी ईश्वरानन्द
सिद्धयोग ध्यान शिक्षक